फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान.प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर **344** *1/–* *फरवरी* **2017**

दैनिक उत्सव से ही हल निकलेगा

बहुत खूब। दम के दम पर बिना किसी और एक को दमदार बनाये। विस्तार।

दमदारों का उत्सव का समय है अब। तथागत की एक बात याद दिलाई एक पाठक ने।एक व्यक्ति ने तथागत से पूछा: '' आनन्द-उत्सव करने का बेहतरीन दिन कौन सा है ?'' तथागत ने प्यार से कहा: ''मौत से एक दिन पहले।''व्यक्ति :''मौत का तो कोई वक्त नहीं !'' तथागत ने मुस्कुराते हुये कहा, '' तो जिन्दगी का हर दिन आखरी समझो और उत्सव करो।''

बहुत खूब। उत्सव को अगर जीवन का सार रखें तो बहुत सारे कारण डगमगा जायेंगे।

किस चीज के कारण ?

बहुत खूब। जैसे कि जॉब-जॉब-जॉब का जप करने से जीवन का अर्थ निकलेगा। जैसे कि आज पिसो-घिसो तो कल-परसों-तरसों इमारत बन जायेगी।

जीवन एक उत्सव है इसका विस्तार कैसे करें, यह दिमाग में घूमता रहता है। अपने आसपास इतनी भिन्नता-विभिन्नता देखता हूँ कि आश्चर्यचकित रहता हूँ।

बहुत खूब। पक्षियों की चोंच को ही ले लो।हर पक्षी की चोंच अलग।शहद लेने वालों की अलग, फल खाने वालों की अलग, सतह से उठाने वालों की अलग, तराशने वालों की अलग, छान कर खाने वालों की अलग।

अद्‌भुत ! मेरे चाचा और उनके साथियों ने अपने दम से, अपनी फैक्ट्री की बातें, अपने बीच घुटन में न रख कर, जब गत्तों पर लिख कर सौ सड़कों पर हजारों से की, तो उनको धुँधलेपन से दूर एक अद्‌भुत विविधता दिखी।

बहुत खूब। बन्धु एक सवाल है। यह विविधता हम खो क्यों देते हैं ? और, भिन्नता-विविधता से डरते क्यों हैं ?

अरे, बोरे में बन्द भी कर देते हैं ! मुझे इतना तो समझ आता है कि कभी एक शब्द से एक रूप मिलता है। जैसे कापसहेड़ा में हम लोग किरायेदार हैं। लेकिन इस शब्द से, इस पहचान से हम हजारों जो रह रहे हैं वो एक-दूसरे के साथ निकटता महसूस नहीं करते।

बहुत खूब।पर वही साथी फैक्ट्री के अन्दर एक-दूसरे से निकटता महसूस करते हैं। इतनी घनिष्टता जो भारी दबाव लिये है। लेकिन यह दबाव अपने से दूसरे कार्यस्थल तक जाने में ढीला हो जाता है। शायद घनिष्टता नहीं रहती।मेरे अनुभव में यह सबसे बड़ा सवाल है।

मेरे चाचा के साथ बातचीत में यह बात बार-बार आती है।उनका दावा है कि जो नई पीढी के वरकर इतनी फैक्ट्रियों में घूम लेते हैं, वे शायद इस सवाल से, इस समस्या से अलग ढँग से जूझेंगे। मेरे चाचा को लगता है कि इस सवाल का हल उनके अनुभव में नहीं मिला।

टेढापन दर टेढापन

✶ ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** (15 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री 30 जून 2016 को बन्द की थी और 23 अक्टूबर 2016 से चालू है। गारमेन्ट्स का पीक सीजन है, ओवर टाइम बहुत है। भुगतान दुगुनी दर से, लेकिन मैनेजमेन्ट ने नियम बनाया है कि सप्ताह में 24 घण्टे (महीने में 96 घण्टे) से ज्यादा जो ओवर टाइम होगा उसके पैसे कम्पनी नहीं देगी। जबरन रोकते हैं और दिसम्बर के ऐसे 12 से 24 घण्टे ओवर टाइम के पैसे करीब 450 बन्दों के कम्पनी ने रोक लिये हैं। सुबह 9 की बजाय फिनिशिंग में महिला मजदूरों को 7 बजे बुलाते हैं। टेलरों द्वारा सुबह 9 से रात 8, रात 1 बजे तक काम। कटिंग और वाशिंग में रात को पौने बारह घण्टे की शिफ्ट भी। उत्पादन आरम्भ होने पर अक्टूबर में एक रविवार को भी ड्युटी थी पर उसके पैसे दिये ही नहीं हैं। नवम्बर में किसी की तीन तो किसी की चार रविवार को भी ड्युटी लेकिन किसी को एक तो किसी को दो सण्डे के ही पैसे दिये, और वह भी सिंगल रेट से। तरीका : जिस रविवार को काम करवाया पर पंच नहीं करवाया उसके पैसे नहीं दिये।

✶ ***ओंकार इन्फोटेक*** (117 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित) कम्पनी में हाउसकीपिंग वरकरों द्वारा नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते, चक्कर कटवाते रहते हैं।

✶ ***सवाना एक्सपोर्ट*** (बी-25 तथा बी-33 ओखला फेज-2 , दिल्ली स्थित) फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्ट कहती है, '' कोई पूछे तो बताना कि सब मजदूर कम्पनी ने रखे हैं, सब परमानेन्ट हैं, सब को ग्रेड मिलता है। कहें कि ई एस आई कार्ड दिखाओ तो कहना कि घर पर छूट गया है।'' कम्पनी की दोनों फैक्ट्रियों में कार्य करते सब मजदूर, 600 वरकर पाँच-छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा — हैल्पर की तनखा 7500 रुपये और टेलर दिहाड़ी पर, आठ घण्टे के 375 रुपये। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। सुबह 9½ से रात 9 तक रोज ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी तनखा के पैसे बैंक खातों में भेजती है, ओवर टाइम के पैसे मिला कर ग्रेड दिखा देते हैं। ओवर टाइम के बचे पैसे बाद में नकद देते हैं।

✶ ***ब्राइट ब्रादर्स*** (16-17 सैक्टर-24 , फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट तो हैं ही, दिन में 12 घण्टे बाद रात को भी 12 घण्टे काम करने को कहते हैं। थोड़े-थोड़े दिनों में लोग छोड़ते रहते हैं और नये बन्दे लगते रहते हैं। तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूर रहते हैं। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं।

✶ ***कृष्णा ग्रुपो एन्टोलिन*** (47 सैक्ट-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में कैन्टीन में मीटिंग में एच आर वाले कहते हैं कि कोई पूछे तो बोलो दो शिफ्ट 8-8 घण्टे की चलती हैं। जबकि, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, महीने के तीसों दिन। रिलीवर नहीं आये तो 36 घण्टे तक छोड़ते ही नहीं — कैन्टीन में खाते रहो और काम में लगे रहो। बगैर गेट पास के गार्ड निकलने ही नहीं देते। रविवार को साप्ताहिक अवकाश है पर अगर सण्डे को ड्युटी के लिये नहीं गये तो उपस्थिति भत्ता काट लेंगे, महीने में एक दिन फैक्ट्री नहीं गये तो अटेन्डेन्स अवार्ड के पूरे 1200 रुपये गायब। फैक्ट्री में मारुति सुजुकी, होण्डा, अशोक लेलैण्ड, स्वराज माजदा, महिन्द्रा, जे सी बी वाहनों की रूफ हैडलाइनर्स 15-20 परमानेन्ट वरकर, एक वर्ष वाले 50-60 बी टेक ट्रेनी, और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 250 टेम्परेरी वरकर बनाते हैं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के जिन में से 20-30 घण्टे खा जाते हैं, सुपरवाइजर लिख कर देंगे तब ओवर टाइम लिखेंगे, बिल चला गया, अगले महीने दे देंगे जैसी बातें।

✶ ***भारत इम्ब्राइड्री*** (284 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में 1 जुलाई 2016 से लागू डी ए के पैसे बैंक में भेजी जा रही तनखा में दे रहे हैं लेकिन फिर वो पैसे ओवर टाइम के भुगतान में से काट लेते हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम 1 जनवरी 2016 वाली तनखा पर ही और सिंगल रेट से।

✶ ***फाउन्डेशन ब्रेक मैनुफैक्चरिंग इन्टरनेशनल*** (9 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 30 परमानेन्ट वरकर, 60-70 टेम्परेरी मजदूर, और आई टी आई तथा डिप्लोमा वाले 300 ट्रेनी मारुति सुजुकी वाहनों के ड्रम व डिस्क ब्रेक बनाते हैं। कुछ उत्पादन सोना पावर स्टेयरिंग को और कुछ मलेशिया निर्यात भी होता है। ज्वाइनिंग लैटर में महीने के 12000 रुपये दिखाते हैं। सैलरी स्लिप में 12000 में से ई एस आई, पी एफ, शिक्षा फण्ड,कैन्टीन चार्ज के 300 रुपये काटे दिखाते हैं। लेकिन ट्रेनी के बैंक खाते में आते हैं 7970 रुपये ही ! एच आर वाले ठीक उत्तर नहीं देते। इन 7970 में से दो छुट्टी करने पर प्रेजेन्टी के 500 और तीन पर 1000 रुपये काट लेते हैं। ट्रेनी ने महीने में तीन छुट्टी कर ली तो 1700 काट कर 6270 रुपये देते हैं। एक वर्ष पूरा होने पर ट्रेनी को निकाल देते हैं।

✶ ***सरगम एक्सपोर्ट*** (153 उद्योग विहार पेज-1, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री से जुलाई 2016 में जिन 300 को नौकरी से निकाला था उन्हें बोनस की राशि नहीं दी है। मना नहीं करते, टरकाते रहते हैं।

✶ ***एसवी प्रिसिजन कम्पोनेन्ट्स***(22 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 10 परमानेन्ट और 200 टेम्परेरी वरकर बजाज बाइक इन्जन के पार्ट्स बनाते हैं। तनखा 5200 रुपये थी तब ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से था। नवम्बर 2015 में तनखा 7600 की तब मैनेजमेन्ट ने ओवर टाइम के पैसे डेढ गुणा की दर से किये। और, इधर जनवरी से ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से करने की बात मैनेजमेन्ट ने कही है।

✶ ***सन्धार कम्पोनेन्ट्स*** (24-25 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में टेम्परेरी वरकरों की कभी शनिवार को भी छुट्टी कर देते हैं और उस दिन के पैसे नहीं देते। मैनेजमेन्ट किसी रोज जबरन 16 घण्टे भी रोकती है। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से।

✶ ***एल जी बालकृष्णन*** (17 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में गड़बड़ी कर टेम्परेरी वरकरों की तनखा से हर महीने 200-400 रुपये खा जाते हैं। नौकरी छोड़ने पर पाँच-दस दिन किये काम के पैसे नहीं देते। पी एफ और ई एस आई की राशि काटते हैं परन्तु चार-छह महीने हो जाने पर भी पी एफ नम्बर नहीं बताते इसलिये पता ही नहीं चलता कि फण्ड के पैसे जमा कर रहे हैं अथवा नहीं।

बहुत—ही कमजोर कम्पनियाँ

✶ ***पी टेक इन्डस्ट्रीज*** (गली 7, सरूरपुर, फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6000 रुपये और ऑपरेटरों की 7000-7500 रुपये। तनखा हर महीने देरी से, 20-22 तारीख को। पचास मजदूरों में 25 की ही ई एस आई तथा पी एफ। और, तनखा से काटी ई एस आई तथा पी एफ की राशि 8 महीने से जमा नहीं की है।

✶ ***मौर्या प्रिंटर्स*** (ए-109 ओखला फेज-2 , दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6500 रुपये। दिसम्बर की तनखा 1 फरवरी तक नहीं दी थी। ✶ ***अभि ऑटो*** (244 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। पचास मजदूर हैं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 8500 रुपये।

✶ ***एम डी एच मसाले*** (216 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में वर्ष में चार महीने सुबह 8 से रात 8 की ड्युटी रहती है। प्रतिदिन 3½ घण्टे का ओवर टाइम कहते हैं पर भुगतान सिंगल रेट से करते हैं।

✶ ***खेतान इलेक्ट्रिकल*** (14 सैक्टर-6, फरीदाबद स्थित) फैक्ट्री में हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, 7600 रुपये और दिसम्बर की तनखा 2 फरवरी तक नहीं दी थी।

✶ ***आस्था पैकेजिंग*** (डी एस आई डी सी-122 ओखला फेज-1 , दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में 35 टेम्परेरी वरकरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, 8000-8500 रुपये और इनकी ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। शिफ्ट सुबह 9½ से रात 8 बजे की और रात 2 बजे तक रोकते हैं। परमानेन्ट मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से और टेम्परेरी वरकरों को सिंगल रेट से।

✶ ***समिक एक्सपोर्ट*** (104-105 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित) लैदर फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9½ तक रोज ड्युटी और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी ड्युटी। ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम, मात्र 28 रुपये प्रति घण्टा। सब मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और 300 में से 250 की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

(शेष पेज तीन पर)

होना, मिल कर होना

✶ फैक्ट्री का नाम, प्लॉट नम्बर तथा सैक्टर लिखने में गड़बड़ हुई। पर हाँ, फैक्ट्री आई एम टी मानेसर में है और इसमें वाहनों की हैड लाइट बना कर लुमैक्स कम्पनी को सप्लाई की जाती हैं। करीब 200 मजदूरों की सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट है और फिर कुछ को पूरी रात भी रोक लेते हैं। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम, पेमेन्ट सिंगल रेट से भी कम, मात्र 22 रुपये प्रति घण्टा। मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। सब वरकर दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे गये हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 10,000 रुपये।

दिसम्बर की तनखा 15 जनवरी तक नहीं दी। सब मजदूर 16 को सुबह फैक्ट्री पहुँचे। अन्दर नहीं गये। गेट पर ही रहे। जिन्हें पूरी रात रोका था उन 26 वरकरों को पता नहीं लगा और दोपहर जब पता चला तब तक गेट से अधिकतर लोग जा चुके थे। लगातार 36 घण्टे काम करना पड़ा।

25 जनवरी को फिर सुबह कोई मजदूर फैक्ट्री में नहीं गया। वरकर कमरों से गये ही नहीं। हर मजदूर को प्लान्ट हैड ने फोन किया, ''1 फरवरी को सब को सैलरी दे देंगे, काम पर आओ।'' कोई वरकर 25 जनवरी को फैक्ट्री नहीं गया, 26 की छुट्टी थी, 27 जनवरी को गये।

✶ नाम, प्लॉट नम्बर फिर गड़बड़ा गये पर बात ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेज-1, दिल्ली स्थित इम्ब्राइड्री फैक्ट्री की है। करीब 150 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते थे। अक्टूबर 2016 में एक रात डायरेक्टर फैक्ट्री में आया और एक मजदूर को सोते देख उसे थप्पड़ मारा। सब वरकर इक्ट्ठे हो गये। साहब ने पुलिस बुला ली। तब से फैक्ट्री पर ताला लगा है।

✶ ***ग्लोबल फ्रेगरेन्सेज*** (1 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित) सुगन्ध बनाने वाली फैक्ट्री में तनखा बहुत देरी से और नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसे नहीं देते थे। तीन महीनों की तनखायें बकाया हो गई तब होली के बाद मार्च 2016 में एक दिन सुबह फैक्ट्री में लड़के-लड़कियों ने काम आरम्भ नहीं किया। एक घण्टे बाद साहब बोला कि काम नहीं करना है तो बाहर जाओ। स्त्री और पुरुष मजदूर फैक्ट्री के बाहर निकल गये। तीन दिन फैक्ट्री गेट पर दिन-रात भूख हड़ताल की, लड़कियाँ रात को चली जाती थी। मैनेजमेन्ट ने धमकाने वाले बुलाये। वरकर नहीं उठे। तब कम्पनी ने पुलिस बुलाई। पुलिस अधिकारी बोला कि फैक्ट्री गेट से हट जाओ नहीं तो लाठियों से भगायेंगे, जाओ लेबर कोर्ट में केस करो। वकील के जरिये केस किया और दस महीनों से तारीखें पड़ रही हैं।

ओरियन्ट क्राफ्ट (ओखला, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में काम करते 5 सिलाई कारीगरों ने पी एफ के पैसे पेन्शन में फँसने से रोकने के लिये इस्तीफे दिये। वे पाँच लगे भी एक ही दिन थे और उन्होंने नौकरी छोड़ी भी एक ही दिन। फण्ड निकालने के फार्म कम्पनी से भरवाये। एक के जो पैसे आये उन से बाकी चार के 50-60 हजार रुपये कम आये। कम्पनी गये, मैनेजर ने फिर फण्ड के फार्म भरे। पी एफ कार्यालय वाले बोले कि खातों में कोई पैसे नहीं हैं। मैनेजर से कहा तो उन्होंने फिर फण्ड के फार्म भर दिये। फिर पी एफ ऑफिस वाले बोले कि खातों में कोई पैसे नहीं हैं। तब वहीं से मैनेजर को फोन किया तो वे बोले, ''रुको, मैं आता हूँ।'' मैनेजर पी एफ ऑफिस पहुँचा तो पहले तो उन्हें भी पी एफ वालों ने खाते खाली दिखाये। मैनेजर ने फण्ड अधिकारी से बात की। उन चार मजदूरों के बैंक खातों में पी एफ कार्यालय ने 50-60 हजार रुपये और भेजे।

एक जनवरी 2017 से देय मंहगाई भत्ते की घोषणा हरियाणा सरकार ने फरवरी आरम्भ तक नहीं की थी।

साझेदारी

✶ मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापते हैं। आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— बुधवार, 1 मार्च को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास मंगलवार, 28 फरवरी को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— वीरवार, 2 मार्च को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में फरवरी में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

बहुत—ही कमजोर कम्पनियाँ ....(पेज दो का शेष)

✶ ***कास्टमास्टर*** (64 सैक्टर-6, फरीदाबद स्थित) फैक्ट्री में 10 परमानेन्ट मजदूर और 150 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में टाटा वाहनों के पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम दिखाते नहीं हैं, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, 7600 रुपये। ✶ ***बोथरा इन्डस्ट्रीज*** (एक्स-25 ओखला फेज-2 , दिल्ली स्थित) प्लास्टिक लाइन की फैक्ट्री में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा — नये हैल्पर की 6000 रुपये, पुराने हैल्पर की 8000, और ऑपरेटरों की 9000-10,000 रुपये। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं — जनवरी से लागु करने की बात।

पत्र : *आगरा जिले के एक गाँव में ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय चलाने वाले मुकेश ने ईंट भट्टा मजदूरों के सम्बन्ध में काफी समय पहले पत्र लिखा था। इधर दिल्ली में नौकरी के अपने अनुभव लिखे हैं।*

पिछले कुछ महीनों पहले मैं दिल्ली के आर के पुरम क्षेत्र में एक साधारण से मजदूर की हैसियत से मजदूरी करने गया। मार्केट बड़ी थी, वह वी आई पी भी थी। मैंने 'लक्ष्मी सुपर मार्ट' में काम किया। महीने के पाँच हजार तय हुए, ड्युटी सुबह 9 से रात्रि 9 तक थी, जैसा कि तय हुआ था। खाना वगैरा कुछ नहीं। मगर जैसे ही 10-15 दिन गुजरे मुझे सुबह 5 बजे से काम पर लगा दिया और रात्रि 11 से 1 बजे तक काम से छोड़ने लगे। विरोध किया तो : जाओ घर, पैसा कुछ नहीं मिलेगा। मजबूरन किया। एक महीने के मुझे महज 4000 रुपये ही दिये। शोरूम में करीब 11 से 14 लड़के काम करते थे। बीमार होने पर कोई छुट्टी नहीं और छुट्टी की तो पैसे काट लेते थे। शोरूम में रोजाना लाखों की सेल होती थी। बिल कच्चे-पक्के दोनों ही दिये जाते थे। साथ ही मजदूरों से गाली गलौज, हाथापाई आम बात थी।

हरेक बोलती है, हरेक बोलता है

बोलने के हजारों तरीके

— पलवल साइड से रोज ई एम यू ट्रेनों से फरीदाबाद ड्युटी करने आते लोगों से बातचीत में आमतौर पर पता ही नहीं चलता कि वे सीधी बात कर रहे हैं ; घुमा के बात कर रहे हैं ; मजाक कर रहे हैं ; गम्भीर हैं ; खिल्ली उड़ा रहे हैं ; या फिर ऐंवें ही बोल रहे हैं।

— एक फैक्ट्री मजदूर : ''हम ने उस दिन कोई मीटिंग नहीं की थी। आपस में बातचीत नहीं की थी। बुला-बुला कर कहने का नहीं किया था। सब अपने में थे, शान्त थे। अपने आप ही सब में 12½ से पहले ही हाथ धोने की बात आई।''

दो छोर हैं : मुँह से बोलना और मुँह से नहीं बोलना। मुँह से बोले को समझना ही बहुत कठिन है। और, जो मुँह से नहीं बोला है उसे समझना तो रिसर्च करने वालों के भी बस के बाहर है। इसलिये मजदूरों के लीडर बनने को आतुर लोग और मजदूरों से रोज रूबरू मैनेजमेन्टें बेहाल हैं।

'' हाँ जी की नौकरी और नाँ जी का घर '' से बात बहुत आगे बढ गई है। मण्डी के समुद्र में कम्पनियाँ कागज की नाव होती हैं। और, अनिश्चितता ही निश्चित है की बढती अभिव्यक्ति का दौर है यह। आई एम टी मानेसर स्थित ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर*** फैक्ट्री में दिसम्बर 2016 में सप्ताह-भर के मेन्टेनैन्स शट डाउन से पहले, 21 से 24 दिसम्बर के दौरान प्रोडक्शन कार्य करते उन 500 से ज्यादा टेम्परेरी वरकरों को नौकरी से निकाल दिया गया जिन्हें काम करते एक वर्ष पूरा नहीं हुआ था।

''ईमानदार नेता — बेईमान नेता'' के जमाने को बीते सौ साल से ऊपर हो गये हैं। ''नेता खाते हैं ; खायें ; पर आटे में नमक के बराबर खायें '' की बातें भी चालीसेक वर्ष पुरानी हो गई हैं। ''लीडर ईमानदार रहता है तो मारा जायेगा और बेईमान बन जायेगा तो बेच खाने की कोशिश करेगा'' का समय है यह। अब फैक्ट्री-दर-फैक्ट्री मजदूरों का यह सामान्य अनुभव है। ऐसे में गाँव-देहात से आ कर फैक्ट्री में लगे नये लोग ही कहते हैं, ''हमारी फैक्ट्री में कोई बोलती ही नहीं, कोई बोलता ही नहीं।'' बहुत जल्दी ही यह साफ हो जाता है कि साहब को मुँह से बोलना मतलब चलती ट्रेन के आगे खड़े हो जाना। नादान कभी-कभी मैनेजमेन्ट को मैनेज करना सिखाने लग जाते हैं। जबकि, मजदूरों द्वारा कब्जे ढीले करने , कब्जे हटाने वाले इस वक्त में भी मैनेजमेन्टों को मैनेज करना सिखाने की भूमिका लीडर लोगों की ही है। इसलिये ऊँच-नीच, मण्डी-मार्केट, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा की बढती लड़खड़ाहट ने हर रंग-रूप के प्रतिनिधियों-नुमाइन्दों-लीडरों-नेताओं को असंगत बना दिया है, नाकारा बना दिया है। अब फैक्ट्री मजदूर जब अकेले-दुकेले में साहबों और नेताओं से बात करते हैं तब आमतौर पर दो शब्द ही प्रयोग करते हैं, ''हाँ जी'' , ''नाँ जी''।

टुकड़ों में (अंग्रेजी में शब्द है fragments में) बातों और कदमों ने फैक्ट्रियों में दो पैसे वाले खबरचियों को मैनेजमेन्टों के लिये फालतू के बनाया। सी सी टी वी कैमरों और रिकार्डरों को फैक्ट्रियों में मजदूरों के हँसी-मजाकों ने बेमतलब के बना दिया है। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में जुलाई 2012 में और उद्योग विहार, गुड़गाँव में फरवरी 2015 में मजदूरों की गतिविधियों ने विद्वानों के बीच सी सी टी वी कैमरों-रिकार्डरों की फिजूलखर्ची पर बहसों को जन्म दिया। और, बांग्लादेश में इधर दिसम्बर 2016 में तो गारमेन्ट वरकरों तथा कम्पनियों के बीच युद्ध में सरकार को मजदूरों के खिलाफ युद्ध दौरान के कानून लागू करने पड़े हैं।

हजारों-लाखों में उत्पादन को कम्पनियों द्वारा रिजैक्ट के तौर पर वापस मँगवाना जो हो रहा है वह फैक्ट्री मजदूरों के ऐंवें ही बाँये हाथ के खेल हैं। मैनेजमेन्टों का तकनीकी समाधान : रोबोट-रोबोट-रोबोट तो मैनेजमेन्टों की खाट खड़ी होने की मुँह बोलती तस्वीर है।

हँसी-हँसी में नई रचनाओं का समय है यह। बोलने के हजारों तरीकों में से कुछ को छोड़ने का भी वक्त है यह। रोना-धोना तो छोड़ना बनता ही है। यह-वह संकट और उनके इस-उस तकनीकी समाधान पर गूढ-गम्भीर अध्ययन-चिन्तन मजाक हैं और इन्हें मजाक के तौर पर लेना ही बनता है।

बढ़ती असुरक्षा कम्पनियों की

(तीस वर्ष पहले फैक्ट्रियों पर पूर्व फौजी आमतौर पर सेक्युरिटी गार्ड होते थे। गार्डों की तनखा प्रोडक्शन करते मजदूरों से ज्यादा होती थी। इन बीस वर्षों में बड़ी-छोटी फैक्ट्रियों पर सेक्युरिटी गार्ड आमतौर पर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे जा रहे हैं और गार्डों की तनखा प्रोडक्शन में टेम्परेरी वरकरों से भी कम है। यह कम्पनियों की बढती कमजोरी की एक अभिव्यक्ति है जो कम्पनियों की असुरक्षा को बढा रही है।)

✶ ***एस एल वी सेक्युरिटी*** (कार्यालय सैक्टर-23, गुड़गाँव) ने आई एम टी मानेसर में कम्पनियों को करीब 400 गार्ड सप्लाई किये हैं। गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ की राशि काट कर गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 9000 से 11500 रुपये।

✶ ***नीलम सेक्युरिटी*** (कार्यालय बदरपुर, दिल्ली) ने दिल्ली में कम्पनियों को 400 गार्ड सप्लाई किये हैं। गार्डों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। दो 12-12 घण्टे की शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे और 30-31 दिन ड्युटी पर गार्ड को 9000 रुपये।

✶ ***एशियन सेक्युरिटी*** (कार्यालय सैक्टर-55, फरीदाबाद) ने करीब 100 गार्ड कम्पनियों को सप्लाई किये हैं। गार्डों के ई एस आई तथा पी एफ नहीं हैं — जनवरी से लागु करने की बातें। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे और 30-31 दिन ड्युटी पर गार्ड को 8000-8500 रुपये।

नोएडा सैक्टर-63 स्थित ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। बातें 1 अक्टूबर 2016 की हैं। सुबह दस बजे वरकरों और मैनेजमेन्ट के बीच गर्मागर्मी हुई। पुलिस को फोन। पी सी आर आई। मजदूरों की भीड़ देख कर पी सी आर लौट गई। कई थानों की पुलिस बुलाई गई। भारी सँख्या में पुलिस के पहुँचने से पहले ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्री के अन्दर तथा बाहर हिंसा हुई। ओरियन्ट क्राफ्ट के जनरल मैनेजर स्तर तक के अफसर पिटे। दर्जन-भर वाहन क्षतिग्रस्त हुये। बगल की फैक्ट्री के भी शीशे टूटे।

कुछ इमेल पते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा	< cm@hry.nic.in>
श्रम आयुक्त, हरियाणा	< labour@hry.nic.in>
मुख्य मन्त्री, दिल्ली	< cmdelhi@nic.in>
श्रम विभाग दिल्ली	< labjlc2.delhi@nic.in >
ई एस आई महानिदेशक	< dir-gen@esic.nic.in >
केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त	< cpfc@epfindia.gov.in >
चीफ विजिलैन्स पी एफ	< cvo@epfindia.gov.in >

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।